काव्यरुप

हमारा परिवेश

3

संकलन

मिशन शिक्षण संवाद

रचना

सुधांशु श्रीवास्तव(स०अ०)
प्रा० वि० मणिपुर, ऐरायां
जनपद-फतेहपुर

Scanned by CamScanner

पाठ-1 (परिवार)

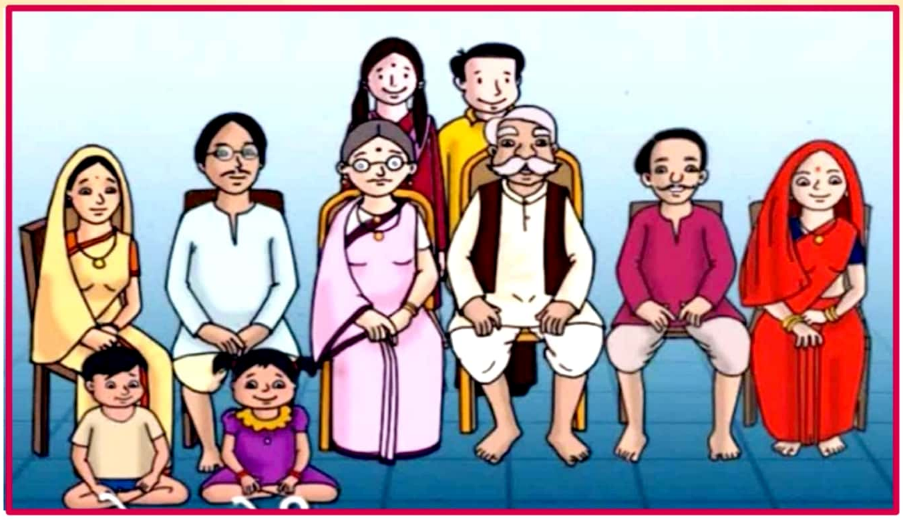

परिवार है ये हमारा,
हमको है सबसे प्यारा।
मिलके साथ सब रहते,
सबने इसे सँवारा।।

मम्मी पापा हैं दादी दादा हैं।
भइय्या बहना हैं चाची चाचा हैं।।
मिलके बनता परिवार है
इनसे खुशियाँ सबको मिलें।

पापा सामान लाते, सब रखवाते।
अच्छा भोजन मम्मी से पाते।।
समाज की इकाई है
हम सबकी जिम्मेदारी।

Scanned by CamScanner

पाठ-2 (पास पड़ोस)

घर के निकट रहते हैं जो,
अपने पास पड़ोसी पाओगे।
जब कोई भी परेशानी हो,
सबसे पहले उन्हें पुकारोगे।।

जब कोई भी मुश्किल आए,
पड़ोसी हैं हम न घबराएँ।
हर घर के पास रहते हैं,
सुख दुख साथ सब सहते हैं।।

मकान सबके जुड़े हैं रहते,
बातें आपस में साझा करते।
मिलकर के समाज को रचते,
हरदम साथ मिला कर चलते।।

Scanned by CamScanner

पाठ-3 (परिवेशीय पेड़ पौधे) भाग-1

परिवेशीय पेड़ पौधे हैं देखो,
जरा इनको पढ़ना।।
पत्ती इनकी होती तरह-तरह की,
ध्यान से इनको देखना।।
पेड़ों को देखो कहते हैं हम हरा सोना,
अनमोल हैं खजाने यह नहीं इन्हे खोना।
मिलती है इनसे हमें ऑक्सीजन,
प्राणवायु के रूप में लेना।। जरा इनको.........
छाया मिले लकड़ी मिले फल फूल हमें मिले,
खाकर इन्हें देखो सबके चेहरे खूब खिले।
परिवेश के पेड़ पौधे को हमें,
बचाने की खातिर सदा कार्य करना।। जरा इनको....

Scanned by CamScanner

पाठ -3, पेड़ पौधों की देखभाल (भाग-2)

सबसे पहले हम,
जमीन में खोदते गड्ढा।
हरे पेड़ हम लगाते,
जो है सबसे अच्छा।।

खाद पानी सही समय पर देते,
पेड़ पौधे वातावरण में।
कार्बन डाइऑक्साइड लेते,
मिनरल्स मिलते जमीन में।।

सूर्य के प्रकाश से,
इनका बनता खाना।
निरंतर इनका ऊपर
यूँ ही बढ़ते जाना।।

रखवाली मिलकर हम करते,
दुनिया को खुशियों से भरते।
हरा भरा यह है संसार,
कुदरत का यह चित्रहार।।

Scanned by CamScanner

पाठ 4, परिवेशीय जीव जंतु, भाग-1

शाकाहारी जीवजंतु - शाक-सब्जी ,फल इत्यादि खाने वाले जीव-जंतुओं को इस श्रेणी में रखा जाता है जैसे गाय, भैंस,बकरी आदि

मांसाहारी जीवजंतु- मांस (meat)को अपने आहार के रूप में ग्रहण करने वाले पशुओं को मांसाहारी कहा जाता है जैसे शेर ,चीता,बाघ,लोमड़ी और भालू आदि

सर्वाहारी जीवजंतु- सभी प्रकार का भोजन करने वाले जीवजंतु सर्वाहारी कहलाते हैं जैसे मनुष्य,बिल्ली,बंदर आदि

तीन प्रकार के जीव,
इस दुनिया में होते।
कोई हैं बहुत बड़े
तो कोई होते छोटे।।
भोजन के आधार पर
शाकाहारी, मांसाहारी।
सबको खाने वाला
देखो कहते सर्वाहारी।।

भेड़, बकरी, गाय, घोड़ा
आदि हैं शाकाहारी।
गिद्ध, बाघ, चीता, मगर,
ये जानो मांसाहारी।।
मानव, कुत्ता, बिल्ली,
ये जीव हैं सर्वाहारी।
तीन प्रकार के जीवों से
पृथ्वी है भरी हमारी।।

Scanned by CamScanner

पाठ -4, पशु पक्षियों की देखभाल (भाग-2)

(1)

खतरे में है देखो,
पक्षी जगत सारा।
इनको बचाने का,
हो संकल्प हमारा।।

(2)

घायल पक्षी मिले अगर,
उसे मरहम लगा देना।
बाग बगीचों में उनके लिए,
छोटा सा घोंसला बना देना।।

(3)

छत पर उनके लिए, रखना बच्चों पानी।
घर में बात यह है, सबको हमें बतानी।।
प्रकृति की अनमोल देन है हमको
बचाना इनका जीवन हम सबको।।

Scanned by CamScanner

पाठ 5, भोज्य पदार्थ

ऊर्जा देने वाले भोजन,
करते हैं हम सब इनका दोहन।
घी, मक्खन, चावल, रोटी, तेल,
खा पीकर बच्चों खेलो तुम खेल।।

वृद्धि करने वाले भोजन,
मरम्मत करते ये शरीर की।
अखरोट, मांस, दाल, दूध,
मछली और मूँगफली।।

ऊर्जा देने वाले भोजन,
करते हैं हम सब इनका दोहन।
घी, मक्खन, चावल, रोटी, तेल,
खा पीकर बच्चों खेलो तुम खेल।।

वृद्धि करने वाले भोजन,
मरम्मत करते ये शरीर की।
अखरोट, मांस, दाल, दूध,
मछली और मूँगफली।।

Scanned by CamScanner

पाठ- 6, पशु पक्षियों का भोजन एवं सहायक अंग

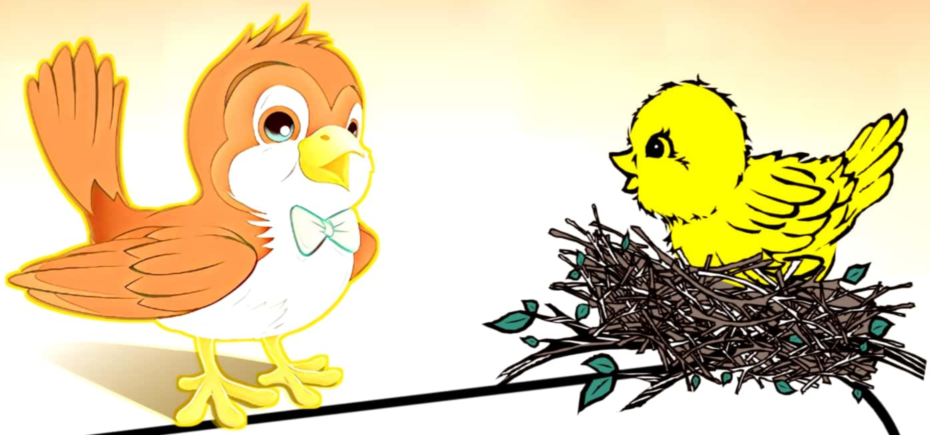

चोंच और पैरों के माध्यम से,
पक्षी अपना भोजन करते।
पैरों से पकड़ते, छीलते व कुतरते,
चोंच से खाकर पेट हैं भरते।।

गौरेया की चोंच छोटी व नुकीली,
उड़ जाती है झट, कितनी है फुर्तीली।
शक्करखोरा की चोंच पतली व घुमावदार।।
रस चूसने में है बहुत मददगार।।

चील बाज की चोंच आगे की तरफ मुड़ी
हो जाए तुरन्त शिकार नजर जहाँ पड़ी।
जल में या कीचड़ में जो पक्षी होते,
लम्बी सी चोंच से लगाते वो गोते।।

Scanned by CamScanner

पाठ-7, हमारा घर

कैसे कैसे घर,
होते बताएँ तुम्हें।
जरूरी है घर,
इसमें रहना है हमें।।

पहले का था जमाना,
घास पूस से था बनाना।
झोपड़ी बनी फिर देखो,
लकड़ी का प्रयोग सीखो।।

बाँस बम्बू के घर बने,
मिट्टी व घर बने खपरैल के,
मानव ने रहना शुरू किया
हर आपदा को झेल के।।

नए दौर में ईंट पत्थर के घर,
इनमें लगता नहीं किसी को डर।
बहुमंजिला इमारत का अब युग आया,
मानव को हर स्थिति में रहना सिखाया।।

Scanned by CamScanner

पाठ-8 (पशु पक्षियों का आवास)

पशु पक्षियों के आवास,
इनको तुम जानो आज।
बन्दर रहता पेड़ की शाखाओं में,
शेर पाया जाए गुफाओं में।।

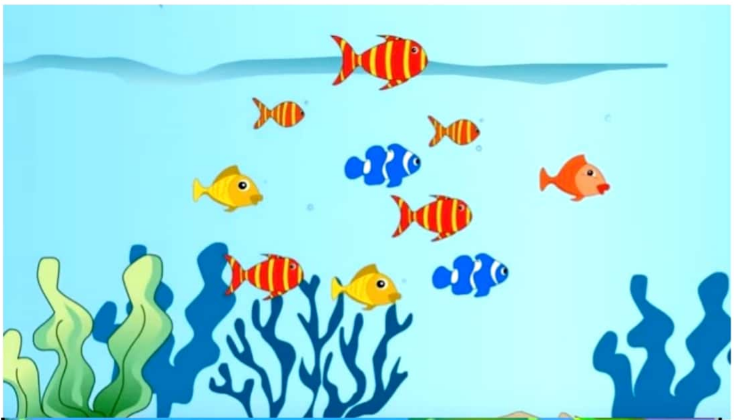

मछली पानी में रहती,
गर्मी ठंडी सब सहती।
चूहा, खरगोश का देखो,
कितना सुन्दर बिल।।

पक्षियों ने बनाया घोंसला,
तिनकों को सिल।
घोड़े का होता अस्तबल,
हाथी का पूरा जंगल।।

Scanned by CamScanner

पाठ 9 (पानी अनमोल है)

सबके लिए जल जीवन,
तेरी एक बूँद के प्यासे हम।
गर न जो मिले हमको।
जिंदा मर जाएँगे हम।।
सबके लिए जल जीवन......

इससे धरती हरी भरी है,
पोखर और तालाब।।
जीव जंतु जल में रहते,
उसमें करते हैं वास।।
कुदरत की अनोखी देन
इसी में रहते हैं जन जन।।
सबके लिए जल जीवन......

जल बचाएँ साथ आएँ।
नहीं तो होगा नाश।।
अंधाधुंध न बहाएँ इनको
इससे जीवन और श्वांस।।
कुछ भी न बचेगा यहाँ।।
ज्यादा न करो दोहन।......

(हमारा परिवेश-3) ।।

Scanned by CamScanner

पाठ 10 (स्वच्छ रहें स्वस्थ रहें)

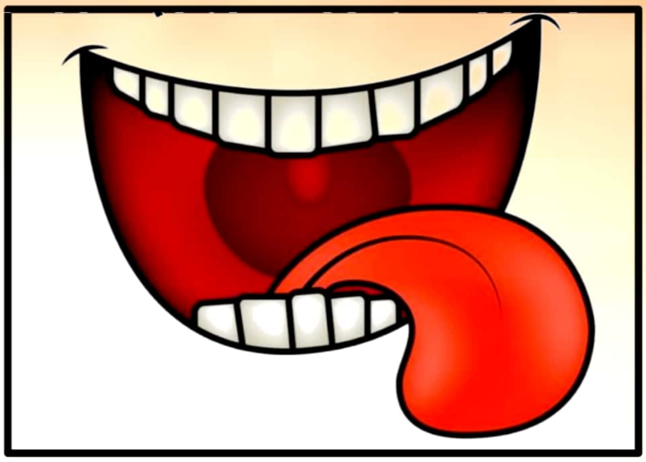

खाने की वस्तु को,
हम दाँतों से चबाते।
जिह्वा से पेट में।
भोजन को पचाते।।

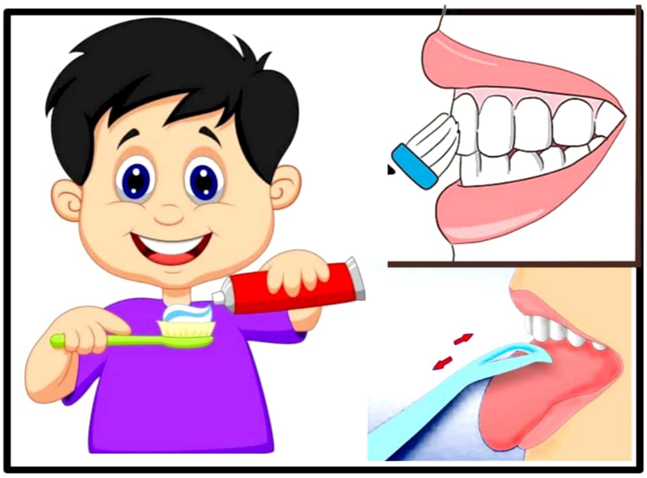

दाँतों की नित करो सफाई,
नहीं करो तुम कोई ढिलाई।
जीभ से हमको होता स्वाद का पता,
भोजन निगलने में करती सहायता।।

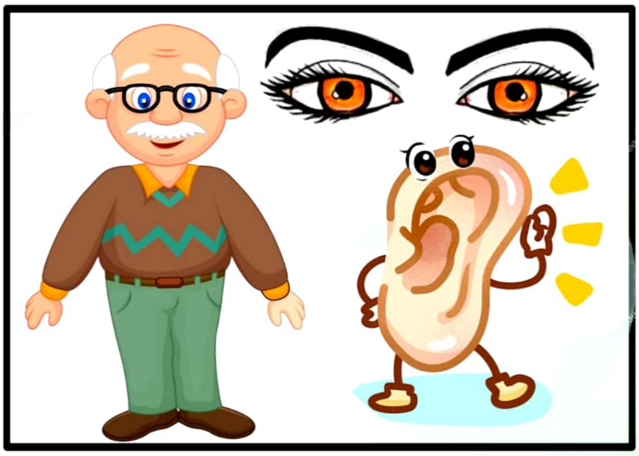

आँखों से हम वस्तु को देखते,
अलग अलग रंग को पहचानते।
बातों को सुनते हमारे कान,
बहुत जरूरी इनका काम।।

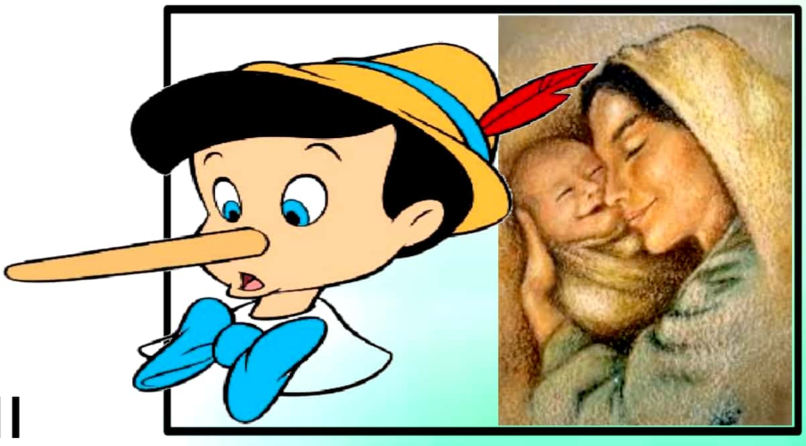

नाक से हम सूँघते जो,
खुशबू हो या बदबू हो।
स्पर्श का ज्ञान कराए त्वचा,
ये बातें ध्यान में रखें हम सदा।।

Scanned by CamScanner

पाठ 11 (हमारी सुरक्षा)

भाग-1

अपने परिवेश में,
हमें सुरक्षित रहना।
स्वस्थ व खुशहाल,
जीवन का क्या कहना।
सीढ़ियों पर बच्चों,
कभी न दौड़ लगाओ,
एक एक सीढ़ी करके,
आराम से चढ़ते जाओ।।
सड़क पर कभी न,
खोलो तुम अपना समान।
आती जाती गाड़ी है,
खतरे में पड़ेगी जान।।

भाग-2

चलती कार या बस से,
मुँह हाथ न बाहर निकालो।
कोई घायल दिख जाए,
तुरन्त उसे बचा लो।।
चाकू, ब्लेड आदि से,
कभी न तुम खेलना।
चोट लग जाएगी ज्यादा,
तुमको पड़ेगा झेलना।।
नुकीली वस्तु को देखो,
मुँह कान में मत डालो।
कोई दिक्कत हो तो,
डॉक्टर को दिखा लो।।

भाग-3

रसोईघर में गर्म वस्तु,
गैस सिलिंडर से रहो दूर।
बड़ों की आज्ञा तुम मानो,
आनन्द लो भरपूर।।

बिजली के स्विच को,
नंगे पैरों से न छूना।
झटका लग जाएगा,
तुमको देखो दूना।।

आपस में तुम खेलो खेल,
बना के रखो सदा ही मेल।
नियम से तुम हमेशा खेलो,
हार जीत का मजा लेलो।।

Scanned by CamScanner

पाठ 12 (यातायात के साधन)

यातायात के साधन बताएँ,
मिनटों में हम सैर कराएँ।

हवा में उड़ता हवाई जहाज,
तेज करता है आवाज।
पानी का देखो स्टीमर,
लहरों में ये अच्छी स्विमर।।

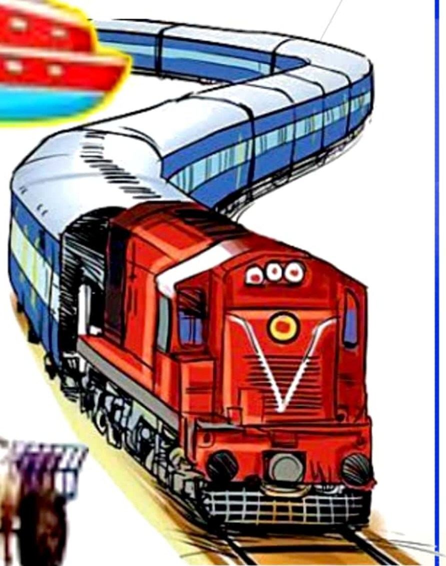

इंजन इसका शक्तिशाली,
पटरी पर दौड़े रेलगाड़ी।
दो बैलों से है ये बनती,
कहते हैं जिसको बैलगाड़ी।।

मोटरगाड़ी व कार,
सड़क पर दिखाती चमत्कार।
तेजी से चलती है देखो,
पल भर में पा लेती रफ्तार।।

Scanned by CamScanner

पाठ-13 (यातायात के नियम)

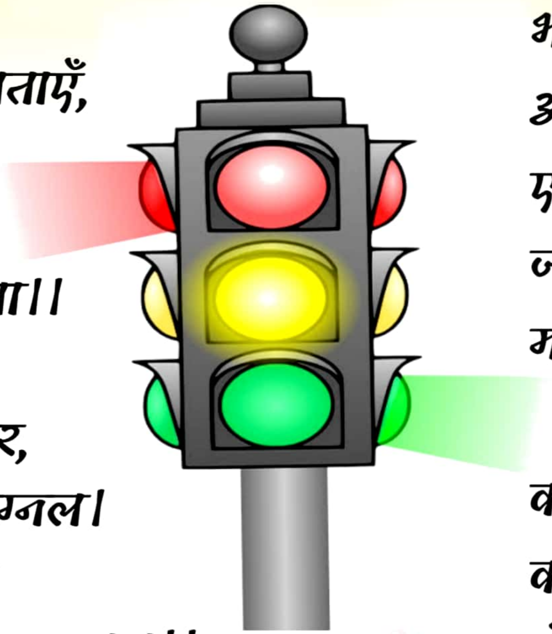

भाग-1

आओ बच्चों तुम्हें बताएँ,
हम सड़क सुरक्षा।
इससे होती है,
हमारे जीवन की रक्षा।।

तीन रंगों से मिलकर,
बनता है ट्रैफिक सिग्नल।
आने जाने का मार्ग,
बताता यह राही को हर पल।।

लाल बत्ती देती,
हमको रुकने का संदेश।
जाने को तैयार हो,
पीली बत्ती का आदेश।।
हरी बत्ती जब जले,
गाड़ी से हम झट चलें।।

भाग-2

आते जाते सड़क पर,
एक्सीडेंट हो जाते हैं।
जाने कितने लोग,
मौत की नींद सो जाते हैं।।

कभी हो अपनी गलती,
कभी किसी और की।
लेकिन जान तो जाती है
इंसान या बेजुबान की।।

भगवान की कृपा का,
कर लो थोड़ा सा जतन।
थोड़ी सी कृपा पाकर,
बच जाएगा ये बदन।।

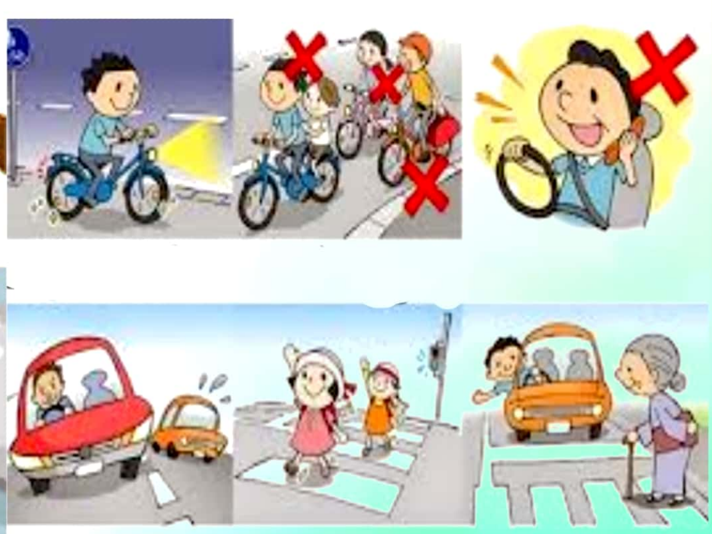

Scanned by CamScanner

पाठ-14 (संचार के साधन)

संचार के होते क्या साधन,
सबको लगते मनभावन।
कागज में चिट्ठी लिखने की बात ही थी कुछ और ।।
मोबाइल से मेसेज करने का आ गया अब दौर।।

डाकिया लाता डाक,
सबकी पहुँचाए बात।
इंटरनेट का अब जमाना,
क्या दिन है क्या रात।।

टेलीविजन से दूर देश का,
समाचार मिल जाता।
अखबारों की खबरों से,
हमें ज्ञान है आता।।

Scanned by CamScanner

पाठ-15 (कूकी कोयल कुल्हड़ ला)

भाग-1

एक समय दो थीं दोस्त,
कोयल कूकी व गौरेया गुनगुन।
सुनाएँ इसकी कहानी,
बच्चों लो तुम ध्यान से सुन।।
गुनगुन के बच्चे,
अण्डे से आये बाहर।
कूकी ने माँगी दावत,
उसके पास जाकर।।
बोली गुनगुन पहले,
सज धज के आओ।
फिर मेरे घर आकर,
खूब दावत खाओ।।

भाग-2

कूकी गयी नदी के पास,
उससे माँगा पानी।
हाथ मुँह धो लूँ मैं,
मुझको दावत है जानी।।
नदी बोली कूकी से,
ले आओ तुम बर्तन।
खूब धोना हाथ मुँह,
पहले पानी भरने का करो जतन।।
जा पहुँची कूकी देखो कुम्हार के पास,
माँगा उसने एक कुल्हड़ जो हो खास।
बोला कुम्हार पहले मिट्टी ले आओ,
झट बना दूँगा कुल्हड़ ले जाओ।।

भाग-3

मिट्टी के पास जा पहुँची अब कूकी,
मिट्टी से माँगी मिट्टी।
मिट्टी ने बोला तेरी चोंच नुकीली,
भर ले इससे जितनी चाहिए तुझे मिट्टी।।
मिट्टी लेकर दिया,
कूकी ने कुम्हार को।
कुम्हार ने बना दिया,
मिट्टी से कुल्हड़ को।।
कुल्हड़ लेकर नदी से,
पानी भरा कूकी ने।
फिर गुनगुन के घर जाकर,
दावत खाई कूकी ने।।

Scanned by CamScanner